ISSN 0973-2616

सीएसआईआर-निस्पर

सीएसआईआर
CSIR
भारत का नवाचार इंजन
The Innovation Engine of India

प्रगति, विकास और आशा

सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 12 अंक 11 www.csir.res.in नवम्बर 2024

सीएसआईआर-आईआईआईएम द्वारा सीएसआईआर हेल्थकेयर थीम कॉन्क्लेव का आयोजन

सीएसआईआर- भारतीय समवेत औषध संस्थान (सीएसआईआर-आईआईआईएम) द्वारा श्रीनगर में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के वन वीक वन थीम (ओडब्ल्यूओटी) अभियान के तहत सीएसआईआर हेल्थकेयर थीम कॉन्क्लेव का आयोजान किया गया। इस कॉन्क्लेव का मुख्य उद्देश्य स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में नवाचार और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देना था। कॉन्क्लेव के उद्घाटन के अवसर पर केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने अपने सम्बोधन में कहा कि यह सम्मेलन वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के वन वीक वन थीम (ओडब्ल्यूओटी) अभियान के तहत आयोजित किया जा रहा है, उन्होंने बताया कि कैसे देश ने 2014 में केवल कुछ सौ स्टार्टअप से लेकर अब कई हजार तक का लम्बा सफर तय किया है, जिसमें कई सफलता की कहानियाँ शामिल हो चुकी हैं। उन्होंने कहा कि इनमें से कुछ कंपनियाँ मामूली शुरुआत के बाद अब सैकड़ों लोगों को रोजगार देती हैं और अपने उत्पाद और सेवाओं का विपणन करती हैं, इनका प्रचार-प्रसार न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी हो रहा है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने जम्मू-कश्मीर में स्टार्टअप इकोसिस्टम के तेजी से विकास पर जोर दिया, जो पिछले पांच वर्षों में 30 से बढ़कर 350 से अधिक स्टार्टअप हो गया है। उन्होंने 2014 से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में शुरू की गई नीतियों के माध्यम से युवाओं की क्षमता को पहचानते हुए ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स में भारत के 81 से 40 वें स्थान पर पहुँचने का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि हेल्थकेयर सेक्टर में डीप-टेक स्टार्टअप को आत्म-विश्वास दिलाने के लिए समर्थन की अधिक आवश्यकता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सरकार बायोई-3 नीति लाई है और स्टार्टअप्स के लिए 1,000 करोड़ रुपये और औद्योगिक केंद्रों के लिए 2,600 करोड़ रुपए आवंटित किए हैं।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री सतीश शर्मा, कैबिनेट मंत्री, खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले, परिवहन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी, युवा सेवाएं एवं खेल तथा कृषि एवं प्रशिक्षण विभाग, जम्मू-कश्मीर सरकार ने कहा कि केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर की उनकी सरकार उन युवाओं को हरसंभव सहायता प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है जो अपनी खुद की कंपनियां स्थापित करना चाहते हैं, क्योंकि इससे केंद्र शासित प्रदेश में आवश्यक रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होंगे।

इस अवसर पर सीएसआईआर की महानिदेशक एवं डीएसआईआर की सचिव डॉ. एन. कलैसेल्वी ने अपने संदेश में बताया कि एक सप्ताह एक थीम (ओडब्ल्यूओटी) अभियान डॉ. जितेंद्र सिंह ने सीएसआईआर प्रयोगशालाओं द्वारा की गई वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के बारे में जागरूकता पैदा करने, एमएसएमई, स्टार्टअप्स, वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं जैसे हितधारकों के बीच जुड़ाव में सुधार लाने, सहयोग को बढ़ावा देने और रोजगार के नए अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से एक कार्यक्रम आयोजित किया। तत्पश्चात यूपी के मुख्यमंत्री के सलाहकार और पूर्व औषधि महानियंत्रक जी.एन. सिंह ने अपने संबोधन के दौरान सीएसआईआर-आईआईआईएम, जम्मू के साथ अपने लंबे जुड़ाव के बारे में उल्लेख किया और बताया कि कैसे उन्होंने संस्थान में दवा खोज अनुसंधान के विभिन्न पहलुओं को आगे बढ़ते देखा है। उन्होंने देश में स्टार्टअप इकोसिस्टम का समर्थन करने और रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए सीएसआईआर सहित अपनी विभिन्न एजेंसियों के माध्यम से सरकार के प्रयासों की सराहना की। सीएसआईआर-सीसीएमबी के निदेशक डॉ. विनय के. नंदीकूरी ने विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं द्वारा हेल्थकेयर क्षेत्र में दिए जा रहे विभिन्न योगदानों के बारे में बात की, जिसमें नई दवाएं, डायग्नोस्टिक्स, एंटीबायोटिक प्रतिरोध की निगरानी शामिल हैं।

डॉ. ज़बीर अहमद, निदेशक, सीएसआईआर-आईआईआईएम ने अपने स्वागत भाषण में दर्शकों को कॉन्क्लेव में आयोजित विभिन्न सत्रों के बारे में जानकारी दी, जिसमें हेल्थकेयर क्षेत्र में 36 स्टार्टअप और 8 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं द्वारा तकनीकी नवाचारों और उत्पादों की प्रदर्शनी शामिल थी, जिसमें कैंसर और संक्रामक रोगों के लिए विकास के तहत नई दवाएं, महिला स्वास्थ्य पर लक्षित उत्पाद, प्राकृतिक सौंदर्य प्रसाधन, साथ ही कार्यात्मक खाद्य पदार्थ, जैव उर्वरक और जैव कीटनाशक शामिल थे। उन्होंने कैंसर, मधुमेह, रुमेटीइड गठिया और यकृत रोगों के लिए दवाओं की खोज में सीएसआईआर-आईआईआईएम के शोध योगदान का भी उल्लेख किया। उन्होंने

सामाजिक पहल- “सीएसआईआर अरोमा मिशन” पर भी प्रकाश डाला, जो डॉ. जितेंद्र सिंह के मार्गदर्शन में फल-फूल रहा है।

इससे पूर्व विशेष व्याख्यान में सीएसआईआर-आईआईसीटी के निदेशक डॉ. डी. श्रीनिवास रेड्डी ने प्राकृतिक उत्पादों से नई दवाओं की खोज के साथ-साथ नए और सरल रासायनिक संश्लेषण मार्गों को विकसित करने और कंपनियों को उनके लाइसेंस देने, जेनेरिक दवाओं के उत्पादन और इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के लिए सीएसआईआर के काम के बारे में बात की।

इस कॉन्क्लेव में अनेक स्टार्टअप्स ने भाग लिया जिसमें मुख्य रूप से मेसर्स चेनाब वैली ज़ैतून टेल, मेसर्स हर्बल ऑरा, मेसर्स साहिल एपीरीज एंड बीहाइव, जागृति प्रोडक्टस, एडॉप्टिव बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड, अल्फा एनवायरनमेंटल सिस्टम, मेसर्स विपन संस, मेसर्स गौरीको, मेसर्स वैली एग्रो इम्पेक्स, मेसर्स अल-करीम सूक प्राइवेट लिमिटेड, मेसर्स अलरिजिक फूड्स एलएलपी, मेसर्स कश्मीर बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड, मेसर्स शिरीन एरोमैटिक्स - रु पोश, मेसर्स ज़ायान ऑर्गेनिक्स, मेसर्स हैपिको इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड, हिमालयन प्रोडक्ट्स, खोरासन हाई-टेक फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री, गुलमर्ग मशरूम फार्म, अज़मत द ब्रांड, यूनाइटेड फ्लोरिटेक, ज़ीबा बायोटेक, फ़ेरोबैंक टेक्नोलॉजीज, नूनली ग्रीन फ़ूड इनोवेशन प्राइवेट लिमिटेड, कार्बोजोन प्राइवेट लिमिटेड, फ्लोरा गार्डन टेक अचाबल, और हिमालयन हर्ब्स बाय जमरूद फ्यूचरिस्टिक ने भाग लिया।

सम्मेलन के पहले दिन शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों, टेक्नोक्रेट, स्टार्टअप्स, उद्योगपतियों, अनुसंधान विद्वानों, नागरिक समाज के सदस्यों और विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और स्कूलों के 300 से अधिक छात्रों की महत्वपूर्ण भागीदारी देखी गई, जिनमें कश्मीर विश्वविद्यालय, एस.पी. कॉलेज, एस.पी. हायर सेकेंडरी स्कूल, गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज पंपोर, इस्लामिया कॉलेज ऑफ साइंस एंड कॉमर्स, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ कश्मीर गांदरबल, एफएसएल लैब बेमिना, इस्लामिया कॉलेज बायोटेक, कश्मीर विश्वविद्यालय, गवर्नमेंट महिला कॉलेज, एम.ए. रोड श्रीनगर, वनस्पति विज्ञान विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, एस.पी. कॉलेज, गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल अमीरा कदल और गांधी कॉलेज बाबादेम शामिल थे।

यह सम्मेलन वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद के संरक्षण में, सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू के निदेशक डॉ. जबीर अहमद के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया, जिसमें इंजीनियर अब्दुल रहीम, विक्रम सिंह, विभिन्न अनुसंधान और प्रशासनिक प्रभागों के विभागाध्यक्ष और वैज्ञानिक कर्मचारियों सहित उनकी टीम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सीएसआईआर-निस्पर एवं गुरुग्राम विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में सीडीटीके 2024 सफलतापूर्वक सम्पन्न

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) और गुरुग्राम विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में 13-14 नवंबर 2024 के दौरान गुरुग्राम विश्वविद्यालय, गुरुग्राम में आयोजित पारंपरिक ज्ञान के संचार और प्रसार पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (सीडीटीके-2024) सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस सम्मेलन के पहले दिन विविध सत्र आयोजित किए गए, जिनमें मुख्य रूप से पारंपरिक शिक्षा पद्धतियों को आधुनिक शिक्षा में एकीकृत करने, पारंपरिक ज्ञान अनुसंधान में नैतिकता और पारंपरिक कृषि और भोजन से जुड़े विज्ञान पर चर्चा शामिल थी। सम्मेलन के अन्य सत्रों में संधारणीय पारंपरिक वास्तुकला, प्राचीन विज्ञानों को आधुनिक विषयों में एकीकृत करने और "पारंपरिक ज्ञान संचार: स्वस्तिक कार्यशाला" के माध्यम से पारंपरिक ज्ञान के विभिन्न पहलुओं पर प्रभावी संचार पर चर्चा की गई।

सीडीटीके 2024 के सफल उद्घाटन दिवस के बाद, दूसरे दिन भी ऐसे सत्र हुए जो पारंपरिक ज्ञान अनुसंधान और संचार के क्षेत्र में गहराई से उतरते हैं। आरोग्य विद्या सत्र की अध्यक्षता प्रो. भूषण पटवर्धन, राष्ट्रीय अनुसंधान प्रोफेसर-आयुष, एसबीपीपीयू, पुणे ने की। उन्होंने स्वास्थ्य पेशेवरों से व्यक्तिगत अहंकार से ऊपर उठकर रोगी के समग्र कल्याण को प्राथमिकता देने और मानवता के लाभ के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाने का आग्रह किया। डॉ. रविनारायण आचार्य, महानिदेशक, सीसीआरएएस, नई दिल्ली ने समावेशी, साक्ष्य-आधारित स्वास्थ्य सेवा ढांचे की मजबूत करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने तृतीयक स्वास्थ्य सेवा के रूप में आयुष प्रणालियों और क्रॉस-रेफरल को एकीकृत करने पर चर्चा की। डॉ. एन. जहीर अहमद, महानिदेशक, सीसीआरयूएम, नई दिल्ली ने दवा की गुणवत्ता और पारंपरिक उपचारों में अनुसंधान के महत्व पर प्रकाश डाला।

चेन्नई के सीसीआरएस के महानिदेशक डॉ. एन.जे. मुथुकुमार ने सिद्ध प्रथाओं के पुनरुद्धार पर जोर दिया और सीसीआरएस ने स्वास्थ्य सेवा संचार को बढ़ाने के लिए डिजिटल उपकरण पेश किए। सीएसआईआर-एनईआईएसटी के निदेशक डॉ. वीरेंद्र एम. तिवारी ने "जल, परिस्थितिकी एवं पर्यावरण" पर आधारित सत्र की अध्यक्षता की और इसमें एनईएचयू शिलांग की प्रोफेसर प्रो. सरोज के. बारिक ने भाग लिया, जिन्होंने पूर्वोत्तर भारत के उदाहरणों का उपयोग करते हुए पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान और जैव विविधता, वन संरक्षण और संधारणीय प्रथाओं में इसके अनुप्रयोगों पर चर्चा की। उन्होंने "आशा वन" और पवित्र उपवनों के महत्व का हवाला देते हुए संधारणीय बांस प्रबंधन पद्धति पर विशेष जोर दिया।

राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, रुड़की के पूर्व निदेशक प्रो. शरद जैन ने जल विज्ञान में प्राचीन भारत की प्रगति के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। उन्होंने सिंधु घाटी सभ्यता के ज्ञान के बारे में बताते हुए ऋग्वेद और अर्थशास्त्र जैसे ग्रंथों का संदर्भ दिया। उन्होंने ऐतिहासिक जल प्रबंधन संरचनाओं और तकनीकों पर प्रकाश डाला। इसके बाद भारत की समृद्ध जल विज्ञान विरासत और सभ्यता और संधारणीयता के साथ इसके संबंध को प्रदर्शित किया। डॉ. ए. रघु, उप महानिदेशक, स्वास्थ्य सेवाएँ, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने "प्राचीन चिकित्सा परंपराओं का पुनरुत्थान एवं आधुनिक स्वास्थ्य सेवा में एकीकरण: योग, होम्योपैथी और सोवा रिग्पा" पर आधारित सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र में आयुष निदेशालय की निदेशक डॉ. योगिता मुंजाल सह-अध्यक्ष थीं।

डॉ. ए. रघु ने विभिन्न क्षेत्रों में पारंपरिक ज्ञान के प्रसार में भारत सरकार के प्रयासों पर बात की और इस ज्ञान को अंतरराष्ट्रीय समुदाय के साथ साझा करने की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। डॉ. सुनील एस. रामटेके, उप महानिदेशक, सीसीआरएच, नई दिल्ली ने होम्योपैथी के संचालन सिद्धांतों पर चर्चा की।

साथ ही उन्हें विभिन्न पौधों और उनके औषधीय लाभों के उदाहरणों के साथ समझाया। डॉ. आई.एन. आचार्य, मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, नई दिल्ली ने समकालीन तनाव के प्रबंधन में प्राणायाम के चिकित्सीय प्रभावों पर जोर दिया।

इसके अलावा, लेह में राष्ट्रीय सोवा रिग्पा संस्थान की निदेशक डॉ. पद्मा गुरमेत ने हिमालयी क्षेत्र में सोवा रिग्पा के महत्व और विशेष रूप से भारतीय बौद्ध धर्म से इसके संबंधों को रेखांकित किया। प्रोफेसर विभा त्रिपाठी, पूर्व विभागाध्यक्ष और एमेरिटस प्रोफेसर, बीएचयू, वाराणसी ने पारंपरिक ज्ञान के वैज्ञानिक सत्यापन: चुनौतियां एवं भावी मार्ग विषय पर पैनल चर्चा की शुरुआत की। इसके अंतर्गत पैनलिस्ट, प्रोफेसर (डॉ.) राम जयसुंदर, प्रोफेसर और प्रमुख, एनएमआर डिवीजन, एम्स, नई दिल्ली ने अनुसंधान के तीन प्रमुख उद्देश्यों पर प्रकाश डाला जो साक्ष्य प्रदान करने के लिए सत्यापन, औषधि की खोज जैसे आधुनिक विज्ञान में पारंपरिक ज्ञान से जुड़े जानकारी का उपयोग, और स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में सुधार के लिए अपेक्षित अनुसंधान से जुड़े हैं।

डॉ. रवींद्र एन. पडारिया, संयुक्त निदेशक (विस्तार), आईएआरआई, नई दिल्ली ने पारंपरिक कृषि ज्ञान के प्रमाणीकरण पर प्रकाश डाला, जिसके लिए अंतर्विषयी सहयोग, समुदाय-आधारित सत्यापन, डिजिटलीकरण, वैज्ञानिक प्रोत्साहन, एनजीओ भागीदारी और विश्वविद्यालय-स्तरीय अनुसंधान की आवश्यकता होती है। इस सत्र में लगभग 400 प्रतिनिधियों ने पोस्टर और मौखिक प्रस्तुतियों में भाग लिया, जिसमें उनके शोध प्रयासों का प्रदर्शन किया गया।

इस अवसर पर प्रो. रंजना अग्रवाल, निदेशक, सीएसआईआर-निस्पर ने सभी का गर्मजोशी से स्वागत करते हुए समापन सत्र की शुरुआत की और कार्यक्रम की सफलता में उनके योगदान के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित श्री अनिल जोशी का विशेष आभार व्यक्त किया।

गुरुग्राम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने सम्मेलन को सफल बनाने में उनके सामूहिक प्रयासों के लिए पूरी टीम को बधाई दी। उन्होंने स्थिरता की आवश्यकता पर प्रकाश डाला और चिंता व्यक्त की कि जब तक हम संधारणीयता प्रथाओं के लिए प्रतिबद्ध नहीं होंगे, तब तक भौतिक संपत्ति हमें पर्यावरणीय क्षरण से नहीं बचा सकती।

सत्र के मुख्य अतिथि पद्म भूषण प्रोफेसर अनिल पी. जोशी, हेस्को, देहरादून ने श्रोताओं को संबोधित करते हुए भारतीय परंपराओं को याद रखने और संरक्षित करने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने उपस्थित लोगों से पश्चिमी दुनिया के प्रभावों से निपटने के दौरान अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति सचेत रहने का आग्रह किया। प्रोफेसर विभा त्रिपाठी ने बेहतर भविष्य के लिए पारंपरिक ज्ञान को समकालीन विज्ञान के साथ सामंजस्य स्थापित करने पर जोर दिया।

डॉ. चारु लता ने सम्मेलन में हुई चर्चाओं का सारांश प्रस्तुत किया। गुरुग्राम विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. धीरेंद्र कौशिक ने सम्मेलन में आए सभी गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिनिधियों को उनके अमूल्य योगदान के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया। उन्होंने इस आयोजन की सफलता के लिए किए गए सामूहिक प्रयासों पर जोर दिया और भविष्य की पहलों में निरंतर भागीदारी को प्रोत्साहित किया। इस समापन सत्र में सम्मेलन की उपलब्धियों को दर्शाया गया और भारत में स्थिरता और परंपरा के महत्व को मजबूत किया गया।

सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई में आईआईएसएफ-2024-प्री-फेस्टिव कार्यक्रम सम्पन्न

सीएसआईआर-केंद्रीय नमक व समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई), भावनगर द्वारा आयोजित भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (आईआईएसएफ 2024)-प्री-फेस्ट कार्यक्रम 06 नवंबर, 2024 को सम्पन्न हुआ।

इस कार्यक्रम में जिज्ञासा अभियान के अंतर्गत गुजरात के विभिन्न विद्यालयों के लगभग 200 छात्रों एवं शिक्षकों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम की शुरुवात डॉ. मंगल सिंह राठौड़ द्वारा प्रस्तुत आईआईएसएफ-2024 के संक्षिप्त परिचय के साथ हुई। डॉ. राठौड़ ने भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव-2024 की पृष्टभूमि, संकल्पना, उद्देश्य तथा इसके विभिन्न आयामों पर विस्तार से प्रकाश डाला। तत्पश्चात डॉ. कमलेश प्रसाद ने स्वागत सम्बोधन प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर डॉ. कान्ति भूषण पाण्डेय, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई ने प्रतिभागी छात्रों को प्रयोगशालाओं में चल रहे अनुसंधान एवं विकास कार्यों के बारे में विस्तार से बताया।

इस दौरान छात्रों को वैज्ञानिकों के साथ चर्चा करने का अवसर मिला। इस आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. गिरीश गोस्वामी, निदेशक-क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र, भावनगर एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुजीत कुमार, कमिश्नर, भावनगर महानगरपालिका ने आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस और वैज्ञानिक चेतना के विभिन्न पक्षों पर अपने विचार साझा किए।

तत्पश्चात डॉ. कन्नन श्रीनिवासन, निदेशक, सीएसआईआर सीएसएमसीआरआई ने कहा कि ऐसे आउटरीच कार्यक्रमों से छात्रों को वैज्ञानिक प्रगति की समझ प्राप्त होती है जिससे उनके भविष्य के विज्ञान करियर का मार्ग प्रशस्त होता है।

डॉ. पुयम एस. सिंह, अध्यक्ष, आईआईएसएफ-2024 प्री फेस्टिव कार्यक्रम के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई में महिला सशक्तिकरण पर कार्यशाला का आयोजन

सीएसआईआर-केंद्रीय नमक व समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई), भावनगर में 16 अक्टूबर, 2024 को संस्थान की सभी महिला कर्मचारियों के लिए "कार्यस्थल पर उत्पीड़न जागरूकता, रोकथाम और आत्मरक्षा कौशल के साथ महिलाओं को सशक्त बनाने" पर एक परस्पर संवादात्मक कार्यशाला का आयोजन किया गया। संस्थान की आंतरिक शिकायत समिति (आईसीसी) द्वारा आयोजित इस कार्यशाला का उद्देश्य कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न के बारे में जागरूकता बढ़ाना, रोकथाम रणनीतियों पर चर्चा करना और महिलाओं की सुरक्षा एवं सशक्तिकरण सुनिश्चित करने हेतु व्यावहारिक आत्मरक्षा कौशल सिखाना था।

कार्यक्रम की शुरुआत आईसीसी की पीठासीन अधिकारी डॉ. सुबर्णा मैती, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक द्वारा अतिथियों का स्वागत करने के साथ हुई।

इस अवसर पर डॉ. कन्नन श्रीनिवासन, निदेशक, सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए महिलाओं के लिए सम्मानजनक और सुरक्षित कार्य वातावरण को बढ़ावा देने में इस तरह की पहल के महत्व पर प्रकाश डाला।

तत्पश्चात श्री सुभाष चन्द्र अंतिल, प्रशासन नियंत्रक, सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई ने महिला कार्मिकों के अधिकारों की रक्षा और उत्पीड़न के मुद्दों के समाधान में आईसीसी की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। इस कार्यशाला में अनेक विषय विशेषज्ञों यथा-सुश्री लताबेन शाह, बाह्य आईसीसी सदस्य; सुश्री नीता यादव सोलंकी, मनोवैज्ञानिक, मानस्व मानसिक स्वास्थ्य केंद्र, भावनगर, डॉ. नेहा गोहिल, अधीक्षक, सीएचसी, गरियाधर तथा स्त्री रोग विशेषज्ञ ने बहुमूल्य मार्गदर्शन एवं कौशल प्रशिक्षण प्रदान किया।

आईसीसी सदस्यों ने कार्यक्रम के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इस विचार का समर्थन किया कि योजना बनाने से लेकर व्यवस्थाओं को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने तक सब कुछ तय समय पर होना चाहिए। कार्यशाला को सफल बनाने में उनके प्रयास महत्वपूर्ण थे। अंत में कार्यशाला का समापन एक चर्चा सत्र के साथ हुआ, जिसके बाद आईसीसी सदस्य डॉ. अनीशा सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

सीएसआईआर-आईएमएमटी में डीएसआईआर-सीआरटीडीएच कॉन्क्लेव-2024 सफलतापूर्वक सम्पन्न

सीएसआईआर- खनिज एवं सामग्री प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-आईआईएमटी) भुवनेश्वर में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) एवं कॉमन रिसर्च एंड टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट हब (सीआरटीडीएच) कॉन्क्लेव-2024 सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) ने 2014-15 में शुरू किए गए अपने कार्यक्रम 'कॉमन रिसर्च एंड टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट हब (सीआरटीडीएच)' के माध्यम से एमएसएमई क्लस्टरों को जरूरी सहायक पारिस्थितिकी तंत्र प्रदान करने का प्रयास किया है, जो एमएसएमई के लिए आवश्यक नवाचार को सुविधाजनक बनाता है। यह कार्यक्रम भारत की समग्र अर्थव्यवस्था में एमएसएमई के महत्व को रेखांकित करता है तथा वैज्ञानिक प्रगति, तकनीकी नवाचारों और सामाजिक-आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने में अनुसंधान एवं विकास बुनियादी ढांचे के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करता है।

सार्वजनिक रूप से वित्तपोषित अनुसंधान संस्थानों में स्थापित सीआरटीडीएच ने न केवल उल्लेखनीय सफलता हासिल की है, बल्कि अपने हितधारकों से प्रेरणादायी सफलता की कहानियाँ भी प्राप्त की हैं। इन उत्कृष्ट और निरंतर उपलब्धियों को व्यापक स्तर पर साझा किया जाना चाहिए, जिनमें वे लोग भी शामिल हैं जो वर्तमान में सीआरटीडीएच नेटवर्क से जुड़े नहीं हैं। इसे देखते हुए, डीएसआईआर ने सीएसआईआर-खनिज एवं सामग्री प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-आईएमएमटी), भुवनेश्वर में 13 और 14 नवंबर 2024 को दो दिवसीय डीएसआईआर-सीआरटीडीएच कॉन्क्लेव 2024 का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न सीआरटीडीएच समर्थित संस्थानों ने भाग लिया और अपनी उपलब्धियों का प्रदर्शन किया।

डीएसआईआर-सीआरटीडीएच कॉन्क्लेव 2024 का उद्घाटन 13 नवंबर 2024 को सीएसआईआर-आईएमएमटी भुवनेश्वर के निदेशक डॉ. रामानुज नारायण के स्वागत भाषण के साथ हुआ। डॉ. रामानुज नारायण ने भारत में एमएसएमई के सामने आने वाली चुनौतियों के समाधान के लिए शिक्षा और उद्योग के बीच सहयोग की आवश्यकता पर जोर दिया।

इस कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य

अतिथि के रूप में डॉ. एन. कलैसेल्वी, सचिव, डीएसआईआर और महानिदेशक, सीएसआईआर ने अपना लाइव वीडियो संबोधन दिया। डॉ. एन. कलैसेल्वी ने एमएसएमई को शैक्षणिक संस्थानों की मदद से और अधिक 'आत्मनिर्भर' बनाने में सीआरटीडीएच कार्यक्रम के महत्व के बारे में विस्तारपूर्वक बात की। उन्होंने कहा कि हम भारत की विभिन्न चुनौतियों का ठोस एवं संधारणीय समाधान करके एमएसएमई आर्थिक विकास को बढ़ा सकते हैं, रोजगार के अवसर पैदा कर सकते हैं और वैश्विक मंच पर भारत की क्षमताओं का प्रदर्शन कर सकते हैं।

डीएसआईआर-सीआरटीडीएच कॉन्क्लेव 2024 में सीआरटीडीएच के परिणामों को प्रदर्शित करते हुए डीएसआईआर द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट का भी अनावरण किया गया जिसका शीर्षक 'सीआरटीडीएच-सहयोग के माध्यम से नवाचार को उत्प्रेरित करना: सीआरटीडीएच की विशेषताएं' था। डॉ. विपिन सी. शुक्ला, वैज्ञानिक 'जी' एवं प्रमुख-सीआरटीडीएच, डीएसआईआर ने अपने उद्घाटन भाषण में नवाचार की आवश्यकता पर प्रकाश डाला और कहा कि नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र के स्तंभ होने के नाते एमएसएमई भारत को वैश्विक अनुसंधान एवं विकास तथा विनिर्माण केंद्र बनाने में चमत्कार कर सकते हैं।

इस दो दिवसीय कार्यक्रम के दौरान चार तकनीकी सत्रों में ओडिशा सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के सलाहकार डॉ. लक्ष्मीनारायण पाढ़ी और एमएसएमई मंत्रालय, भारत सरकार के एमएसएमई विकास संस्थान, कटक के निदेशक श्री पीके गुप्ता ने मुख्य भाषण दिया। तकनीकी सत्रों में संबंधित सीआरटीडीएच और एमएसएमई लाभार्थियों के समन्वयकों द्वारा प्रस्तुति दी गई।

इस सम्मेलन में डीएसआईआर-सीआरटीडीएच प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया गया, जिसमें विभिन्न सीआरटीडीएच द्वारा विकसित उत्पादों/प्रोटोटाइप के पोस्टर, ऑडियो विजुअल और सीआरटीडीएच में इनक्यूबेट किए गए एमएसएमई/स्टार्ट-अप प्रदर्शित किए गए। इन प्रदर्शनियों के माध्यम से अन्य सीआरटीडीएच के साथ नेटवर्किंग का अवसर प्रदान किया गया और उन्हें अन्य सीआरटीडीएच की विभिन्न उपलब्धियों के बारे में भी बताया। प्रदर्शनी ने विभिन्न एमएसएमई/स्टार्ट-अप को सीआरटीडीएच में समर्थित/इनक्यूबेट किए गए अन्य एमएसएमई/स्टार्ट-अप के साथ बातचीत करने का अवसर भी दिया।

इस सम्मेलन में विभिन्न एमएसएमई, उद्योग संघों, स्टार्टअप्स, छात्रों और शोधकर्ताओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और इसमें संवादों का आदान-प्रदान हुआ तथा साथ मिलकर काम करने के लिए सार्थक नेटवर्किंग की गई।

सम्मेलन में डीएसआईआर की वैज्ञानिक-ई डॉ. सुमन मजूमदार ने भी हिस्सा लिया, जिन्होंने समन्वयकों और संभावित एमएसएमई और स्टार्टअप्स के बीच विचारों के आदान-प्रदान में मदद की।

इस सम्मेलन का समापन डॉ. विपिन सी. शुक्ला, वैज्ञानिक जी और प्रमुख-सीआरटीडीएच, डीएसआईआर के संदेश और डॉ. सुमन मजूमदार, वैज्ञानिक-ई, डीएसआईआर के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। इस सम्मेलन ने अगले साल एनआईपीईआर, मोहाली में होने वाले सम्मेलन का मार्ग भी प्रशस्त किया।

सीएसआईआर- एनसीएल में विज्ञान हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन

सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे में हिन्दी पखवाड़ा के अंतर्गत दिनांक 23 सितंबर, 2024 को "मूलभूत अनुसंधान" विषय पर एक विज्ञान हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस संगोष्ठी में श्री अजित जोशी (मुख्य वैज्ञानिक), डॉ. अशोक गिरी (मुख्य वैज्ञानिक), डॉ. महेश कुलकर्णी (वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक), श्री कौशल कुमार (प्रशा. अधिकारी) एवं डॉ. (श्रीमती) स्वाति चड्ढा (हिन्दी अधिकारी) ने मंच साझा किया।

इस संगोष्ठी का आयोजन दो तकनीकी सत्रों में किया गया, जिसमें कुल 08 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए ।

प्रत्येक सत्र में चार-चार शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। तकनीकी सत्रों की अध्यक्षता डॉ. भूषण चौधरी, (वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक), तथा डॉ. मोनीशा फर्नांडिस (वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक) ने अत्यंत कुशलतापूर्वक तथा रोचक ढंग से की। इस संगोष्ठी में 85 प्रतिभागियों ने प्रतिभागिता की।

संगोष्ठी के आरंभ में सर्वप्रथम श्री मोहन सूर्यवंशी (अनुभाग अधिकारी) द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई, तत्पश्चात मंचासीन अधिकारियों का स्वागत किया गया।

उद्घाटन सत्र के आरंभ में स्वागत भाषण डॉ. (श्रीमती) स्वाति चड्ढा ने प्रस्तुत किया तथा संगोष्ठी के उद्देश्य पर प्रकाश डाला । तत्पश्चात श्री कौशल कुमार ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिन्दी राजभाषा, सम्पर्क भाषा, जनभाषा के सोपानों को पार कर विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है किन्तु तकनीक और विज्ञान से संबंधित क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोग अत्यंत कम होता है ।

आज राष्ट्रभाषा के रूप में विकसित होने के लिए हिन्दी भाषा में पर्याप्त विज्ञान सम्बन्धी साहित्य अपेक्षित है। साथ ही अधिकांश वैज्ञानिक शोधकार्य अंग्रेजी भाषा में ही होने के कारण जन साधारण तक उसकी जानकारी नहीं पहुंच पाती है । अत: राजभाषा हिन्दी के माध्यम से इस संगोष्ठी का आयोजन करके हम वैज्ञानिक कार्यों को हिन्दी भाषा में करने का संदेश भी दे रहे हैं ।

तत्पश्चात कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री अजित जोशी ने इस अवसर पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि "एक राष्ट्र, एक ध्वज के साथ-साथ एक भाषा का विधान होना भी आज की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि देश की सभी भाषाओं के विकास हेतु पर्याप्त अवसर मिलने चाहिए तथा राजभाषा के रूप हिन्दी को सही अर्थो में अपनाना हमारा संवैधानिक दायित्व है।

उद्घाटन सत्र के पश्चात तकनीकी सत्र आयोजित किए गए, जिसे डॉ. भूषण चौधरी तथा डॉ. मोनिशा फर्नांडिस ने कुशलतापूर्वक संचालित किया।इन संगोष्ठी में डॉ. कुमार वांका, श्री आशय ब्रम्हे, सुश्री प्रतीक्षा पांडे, श्री पवन कुमार, सुश्री प्रांजली काटे, श्रीमती पूर्वी पुरोहित, श्री पीयूष महाराना एवं डॉ. प्रवीन गोयल ने अपने-अपने शोधपत्र अत्यंत रोचक तरीके से प्रस्तुत किए।

तत्पश्चात संगोष्ठी के आयोजक तथा हिन्दी पखवाड़ा आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. अशोक गिरी ने सभी को धन्यवाद देते हुए कहा कि हिन्दी के माध्यम से हम सब एक मंच पर आए हैं तथा अपने शोध कार्यों को जन भाषा में लाने का आप सभी का प्रयास सराहनीय है। वैज्ञानिकों के कार्य को जन-जन तक पहुँचाना अत्यंत जरूरी है और यह जनभाषा हिन्दी के माध्यम से ही संभव हो सकता है ।

मौलिक वैज्ञानिक साहित्य को प्रचुर मात्रा में लिखा जाये और इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए वैज्ञानिक संगोष्ठियां हिन्दी माध्यम से की जाएं एवं हिन्दी भाषा में वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण भी हो।

सभी सत्र अध्यक्षों द्वारा प्रत्येक प्रस्तुति के पश्चात उसकी विवेचनापूर्ण समीक्षा करते हुए उस विषय पर अपने मौलिक विचार भी प्रस्तुत किए गए तथा उपस्थित शोध छात्रों तथा वैज्ञानिकों को भी चर्चा में सम्मिलित किया गया। सभी 08 शोधपत्रों का प्रस्तुतिकरण अत्यंत महत्वपूर्ण एवं रोचक रहा। उपस्थित सभी शोध छात्रों/वैज्ञानिकों एवं स्टाफ सदस्यों ने इस आयोजन की बहुत सराहना की ।

अंत में डॉ. (श्रीमती) स्वाति चड्ढा द्वारा आभार ज्ञापित किया गया और डॉ. अशोक गिरी द्वारा समस्त शोधपत्र प्रस्तुतकर्ताओं तथा सत्र अध्यक्षों को स्मृति चिह्न देकर सममानित किया गया।

सीएसआईआर-आईएचबीटी में भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव के कर्टेन रेज़र कार्यक्रम का आयोजन

सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर ने 08 नवंबर 2024 को भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (आईआईएसएफ) के कर्टेन रेज़र कार्यक्रम का आयोजन किया। आईआईएसएफ एक वार्षिक कार्यक्रम है, जिसका मुख्य उद्देश्य विज्ञान को उत्सव के रूप में मनाना है। यह लोगों और वैज्ञानिक समुदाय को एक साथ लाने , मिलकर काम करने, और जन कल्याण के लिए वैज्ञानिक कार्यों का आनंद अनुभव करने, विज्ञान से जुड़े विषयों पर सामूहिक रूप से चिंतन एवं मंथन करने का अवसर प्रदान करता है।

इस वर्ष आईआईएएफ 30 नवंबर से 03 दिसंबर 2024 तक गुवाहाटी, असम में आयोजित किया जाएगा, जिसका विषय "भारत को विज्ञान और प्रौद्योगिकी संचालित वैश्विक विनिर्माण केंद्र में बदलना" है। आईआईएसएफ "आधुनिक बुनियादी ढांचे और प्रकृति के साथ सामंजस्य में एक समृद्ध भारत" की परिकल्पना करता है, जो सभी क्षेत्रों के सभी नागरिकों को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से अपनी क्षमता तक पहुंचने के अवसर प्रदान करता है।

सीएसआईआर-आईएचबीटी में कर्टेन रेज़र कार्यक्रम में, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, श्री कोम्पेला एस. शास्त्री, राष्ट्रीय सचिव, विज्ञान भारती ने आईआईएसएफ के महत्व और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने देश की समृद्ध वैज्ञानिक विरासत और इसे गति देने की आवश्यकता पर विस्तार से चर्चा की।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि, डॉ. अश्विनी राणा, अध्यक्ष, विज्ञान भारती, एच.पी. चैप्टर और एसोसिएट प्रोफेसर, एनआईटी, हमीरपुर ने विकास में विज्ञान की भूमिका और इसे जनसाधारण के बीच लोकप्रिय बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने एच.पी. चैप्टर द्वारा किए जा रहे कार्यों और राष्ट्र निर्माण में उनकी महत्ता को प्रस्तुत किया।

इससे पूर्व सीएसआईआर-आईएचबीटी के निदेशक, डॉ. सुदेश कुमार यादव ने गणमान्य व्यक्तियों और अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने संस्थान में किए जा रहे कार्यों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि कैसे संस्थान, सीएसआईआर मिशनों जैसे अरोमा, फ्लोरीकल्चर और फाइटोफार्मास्युटिकल के माध्यम से विकसित भारत 2047 के सपने को पूरा करने की ओर अग्रसर है। उन्होंने जनसाधारण के बीच जागरूकता सृजन और विज्ञान को लोकप्रिय बनाने की आवश्यकता को भी रेखांकित किया ताकि इसके पूर्ण लाभ प्राप्त किए जा सकें और युवा पीढ़ी को प्रेरित किया जा सके।

डॉ. अमित कुमार, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-आईएचबीटी ने आईआईएसएफ 2024 के विस्तृत प्रोग्राम की जानकारी साझा की। अंत में, उन्होंने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर जिज्ञासा कार्यक्रम के अंतर्गत राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक कन्या विद्यालय, पालमपुर की 50 छात्राओं और पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय, पालमपुर के 50 छात्र सभागार में उपस्थित रहे तथा संस्थान की गतिविधियों को जाना। इसके अतिरिक्त पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय, धर्मशाला के 116 छात्र; राजकीय माध्यमिक विद्यालय चंद्रोन, जिला कांगड़ा के 34 छात्र और केलप्पाजी कृषि इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय तवानुर, केरल के 20 छात्र (बी.टेक. फूड टेक.) और 02 शिक्षकों ने संस्थान की अनुसंधान प्रयोगशालाओं का दौरा किया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई में भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव के कर्टेन रेज़र कार्यक्रम का आयोजन

सीएसआईआर- केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की ने 19 नवंबर, 2024 को भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (आईआईएसएफ) 2024 का के कर्टेन रेज़र कार्यक्रम का आयोजन किया। भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (आईआईएसएफ) 30 नवंबर से 3 दिसंबर, 2024 तक आईआईटी गुवाहाटी में किया जाएगा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसी पहलों के अनुरूप भारत के विकास में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका को प्रेरित करना और प्रदर्शित करना है। "भारत को विज्ञान और प्रौद्योगिकी संचालित वैश्विक विनिर्माण केंद्र में बदलना" विषय आत्मनिर्भर, तकनीकी रूप से सशक्त भविष्य के लिए राष्ट्र के दृष्टिकोण को दर्शाता है। आईआईएसएफ़ 2024 के अग्रदूत के रूप में, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने 19 नवंबर, 2024 को एक कर्टेन रेज़र इवेंट की मेजबानी की।

इस कार्यक्रम में वैज्ञानिकों और छात्रों के बीच एक संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया, जो वैज्ञानिक विकास के प्रति जिज्ञासा और जुड़ाव को बढ़ावा देता था। इस कार्यक्रम में केंद्रीय विद्यालय नंबर 1, सीओईआर रुड़की और क्वांटम यूनिवर्सिटी, रुड़की के लगभग 100 छात्रों और शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर आमंत्रित छात्रों को सीटीसिफॉन प्रदर्शनी गैलरी का भ्रमण कराया गया , जिसमें सीएसआईआर-सीबीआरआई में अत्याधुनिक शोध और नवाचारों को प्रदर्शित किया गया। छात्रों को राम मंदिर के निर्माण और सुपरटेक ट्विन टावर्स के विध्वंस जैसी उल्लेखनीय परियोजनाओं ने छात्रों की रुचि को आकर्षित किया, जिससे उनके पीछे की विज्ञान, तकनीक और नवाचारों के बारे में जिज्ञासा पैदा हुई। कार्यक्रम की शुरुआत सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक के प्रेरक उद्घाटन भाषण से हुई। उन्होंने आईआईएसएफ 2024 की थीम पर विस्तार से चर्चा की, जिसमें आधुनिक बुनियादी ढांचे के विकास को प्राकृतिक पर्यावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने की महत्वपूर्ण आवश्यकता पर जोर दिया गया। उन्होंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी की शक्ति के माध्यम से अपनी पूरी क्षमता हासिल करने के लिए सभी क्षेत्रों के नागरिकों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने के महत्व पर जोर दिया। निदेशक ने भारत को एक विकसित राष्ट्र (विकसित भारत) में बदलने की साझा जिम्मेदारी को भी रेखांकित किया, और छात्रों को इस राष्ट्रीय आकांक्षा के लिए खुद को समर्पित करने के लिए प्रेरित किया। उनका भाषण विनिर्माण, नवाचार और सतत प्रगति में वैश्विक नेता के रूप में उभरने के भारत के दृष्टिकोण के साथ सहज रूप से जुड़ा हुआ था।

इस कार्यक्रम के दौरान छात्रों और वैज्ञानिकों के बीच प्रत्यक्ष एवं जीवंत साक्षात्कार हुआ, जिससे छात्रों को प्रश्न पूछने, अंतर्दृष्टि प्राप्त करने और विशेषज्ञों से सीधे जुड़ने का अवसर मिला। निदेशक ने छात्रों और कर्मचारियों के सदस्यों को वैज्ञानिक मानसिकता विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया और वैज्ञानिक प्रगति के माध्यम से भारत को एक आत्मनिर्भर राष्ट्र में नवाचार और अनुसंधान की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। कार्यक्रम में मुख्य वैज्ञानिक डॉ. हरपाल सिंह द्वारा आईआईएसएफ 2024 का एक व्यावहारिक परिचय दिया गया, जिन्होंने भारत की वैज्ञानिक आकांक्षाओं को आगे बढ़ाने में महोत्सव के उद्देश्यों और महत्व के बारे में विस्तार से बताया।

इस कार्यक्रम का समापन मुख्य वैज्ञानिक डॉ. डी. पी. कानूनगो द्वारा दिए गए हार्दिक धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ, जिन्होंने सभी प्रतिभागियों, आयोजकों और संकाय सदस्यों को उनके योगदान के लिए ईमानदारी से प्रशंसा व्यक्त की। कार्यक्रम का निर्बाध समन्वयन मुख्य वैज्ञानिक श्री नदीम अहमद द्वारा कुशलतापूर्वक किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण दो व्यावहारिक व्याख्यान थे। पहला, इंजीनियर हुमिरा अतहर द्वारा, जिसका शीर्षक "प्रदूषण को संभावनाओं में बदलना: कार्बन कैप्चर की कार्यप्रणाली", ने अभिनव कार्बन कैप्चर तकनीकों की खोज के बारे में प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि औद्योगिक गतिविधियों से कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन को कैसे रोका जा सकता है, जबकि संधारणीय विकास के अवसर पैदा किए जा सकते हैं, उन्होंने पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करने में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की शक्ति पर प्रकाश डाला। इंजीनियर कांति लाल सोलंकी द्वारा दिए गए दूसरे व्याख्यान में "उद्योगों को बदलने में आईओटी (IoT) की भूमिका" पर चर्चा की गई। उन्होंने चर्चा की कि कैसे आईओटी विनिर्माण, रसद और ऊर्जा प्रबंधन में वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों के साथ संचालन को अनुकूलित करने और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए अधिक स्मार्ट, अधिक कुशल प्रणालियों को सक्षम करके औद्योगिक प्रक्रियाओं में क्रांति ला रहा है। दोनों व्याख्यानों में सक्रिय भागीदारी देखी गई। छात्रों और शिक्षकों ने सारगर्भित चर्चाओं में भाग लिया, जिसमें उभरती हुई प्रौद्योगिकियां, सामाजिक चुनौतियों तथा राष्ट्रीय विकास विषय पर गहन चर्चा हुई। इस कार्यक्रम में डॉ. चंदन एस. मीना, डॉ. हेमलता, डॉ. ताबिश आलम, डॉ. नवीन निशांत, इंजीनियर के. सोलंकी और डॉ. सुमन की सक्रिय भागीदारी रही जिनकी विशेषज्ञता और छात्रों के साथ बातचीत ने कार्यक्रम के प्रभाव को काफी रोचक बनाया। कार्यक्रम के समापन पर, छात्रों और शिक्षकों ने एक प्रेरक शिक्षण अनुभव प्रदान करने के लिए सीएसआईआर-सीबीआरआई का आभार व्यक्त किया। भवन विज्ञान और टिकाऊ प्रौद्योगिकी में नवाचारों के प्रदर्शन ने उपस्थित लोगों को एक प्रगतिशील, टिकाऊ भविष्य को आकार देने में अपनी भूमिका पर गंभीरता से विचार करने के लिए प्रेरित किया।

सीएसआईआर-एनसीएल द्वारा सीएसआईआर स्थापना दिवस का आयोजन

सीएसआईआर- राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, (सीएसआईआर-एनसीएल), पुणे ने 4 नवंबर 2024 को वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के 83 वें स्थापना दिवस का आयोजन किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. हेमंत दरबारी, मिशन निदेशक-राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन, सी-डैक, पुणे, ने "सैटिएट फ्यूचेरिस्टिक कम्प्यूटेशन थ्रू इनसैटिएटबल कंप्यूटेशन " विषय पर स्थापना दिवस व्याख्यान दिया।

इस अवसर पर डॉ. आशीष लेले, निदेशक, सीएसआईआर-एनसीएल ने सीएसआईआर की स्थापना से जुड़े इतिहास और समाज को लाभ पहुंचाने में सीएसआईआर की महत्वपूर्ण उपलब्धियों के योगदान पर प्रकाश डाला। सीएसआईआर की कुछ विशेष उपलब्धियों में पहले स्वदेशी ट्रैक्टर का विकास, भैंस के दूध से बना पहला बेबी मिल्क पाउडर, शुरुआती दवा कंपनियों का विकास, पहला स्वदेशी रूप से अभिकल्पित एवं निर्मित एअरक्राफ्ट आदि शामिल हैं। उन्होंने तत्पश्चात मुख्य अतिथि डॉ. हेमंत दरबारी के बारे में श्रोताओं का संक्षेप में परिचय करवाया।

डॉ. हेमंत दरबारी ने अपने संबोधन की शुरुआत मौसम पूर्वानुमान, जलवायु मॉडलिंग, सामग्री अनुसंधान, समुद्र विज्ञान सिमुलेशन, जैव सूचना विज्ञान, आणविक गतिशीलता आदि सहित बड़ी चुनौतीपूर्ण समस्याओं पर अपने विचार साझा किए।

डॉ. दरबारी ने कहा कि इनसैटिएबल कंप्युटेशन ऐसी चुनौतीपूर्ण समस्याओं को सुलझाने में सक्षम है। उन्होंने इस तथ्य को रेखांकित किया कि कंप्युटेशन ने हमेशा विभिन्न डोमेन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालाँकि, पारंपरिक सीपीयू अपनी बड़ी बिजली आवश्यकताओं के कारण उच्च स्तरीय कंप्यूटिंग की आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकते हैं। दूसरी ओर, जीपीयू एक कुशल ऊर्जा विकल्प की सुविधा प्रदान करता है। इन प्रौद्योगिकियां का संयोजन नवाचार को आगे बढ़ाने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने बताया कि पारंपरिक प्रमुख प्रयोग प्रविधियाँ आज की परिस्थितियों के अनुकूल नहीं हैं क्योंकि कंप्यूटर सिमुलेशन एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उन्नत अनुसंधान में तेजी लाने हेतु उभरता हुआ क्षेत्र है । आज के संदर्भ में, भविष्य के अनुसंधान करने की क्षमता सीधे तौर पर पर्याप्त उच्च-स्तरीय कंप्यूटिंग अवसंरचना विकसित करने की क्षमता से जुड़ी हुई है।

डॉ. दरबारी ने नवाचार के सामंजस्यपूर्ण मिश्रण के माध्यम से प्राप्त उच्च गति वाले सुपरकंप्यूटिंग के महत्व पर चर्चा की। राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन (एनएसएम) पूरे भारत में सुपरकंप्यूटिंग बुनियादी ढांचे की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस मिशन में सुपरकंप्यूटिंग पारिस्थितिकी तंत्र का विकास, स्वदेशी सुपरकंप्यूटर के विकास और राष्ट्रीय महत्व के अनुप्रयोग शामिल हैं।

डॉ. दरबारी ने स्वदेशी रूप से अभिकल्पित एवं निर्मित रुद्र बोर्ड और 4 नोड क्लस्टर के साथ-साथ देश भर में तैनात उल्लेखनीय सुपर कंप्यूटरों जैसे आईआईटी (बीएचयू) में परम शिवाय, आईआईएसईआर-पुणे में परम ब्रह्मा तथा आईआईटी खड़गपुर में परम शक्ति के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। उन्होंने ऐरावत और परम सिद्धि-एआई एकीकृत क्लाउड अवसंरचना सहित स्वदेशी घटकों और प्रणालियों के निर्माण में राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन के योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने एनएसएम की महत्वपूर्ण उपलब्धियों जिसमें उच्च प्रदर्शन कंप्यूटिंग (एचपीसी) के लिए बुनियादी ढांचे को विकसित करना और इसके लिए भारत के भीतर विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र को सक्षम बनाना शामिल है, का उल्लेख किया । उन्होंने कहा कि कम्प्यूटिंग के क्षेत्र में 64 पेटाफ्लॉप की संयुक्त कंप्यूटिंग क्षमता वाली 24 एचपीसी सुविधाओं की स्थापना एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

डॉ. स्वाति चड्ढा, हिंदी अधिकारी, सीएसआईआर-एनसीएल ने स्वागत भाषण दिया तथा कार्यक्रम का संचालन किया। इस अवसर पर पिछले एक वर्ष में सीएसआईआर की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए परिषद कर्मचारियों तथा सीएसआईआर में 25 वर्ष की निरंतर सेवाएं पूर्ण करने वाले कर्मचारियों को भी मुख्य अतिथि द्वारा सम्मानित किया गया ।

अंत में डॉ. स्वाति चड्ढा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

Megazine Post No. DL(DS)-69/MP/2023-24-25
RNI-DELHI/2013/52141

सीएसआईआर-सीडीआरआई में दो दिवसीय एक थिमैटिक कॉन्क्लेव का आयोजन

सीएसआईआर-केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीडीआरआई) लखनऊ ने सीएसआईआर वन वीक वन थीम (ओडब्ल्यूओटी) पहल के हिस्से के रूप में "किफायती स्वास्थ्य सेवा के लिए भारत की अनुसंधान एवं विकास प्राथमिकताएं" विषय पर पर दो दिवसीय एक थिमैटिक कॉन्क्लेव का सफलतापूर्वक आयोजन किया। यह आयोजन 13 से 14 नवंबर, 2024 के दौरान हुआ। इस कार्यक्रम में कैंसर अनुसंधान और व्यक्तिगत चिकित्सा पर विशेष ध्यान देने के साथ किफायती स्वास्थ्य सेवा में नवीनतम प्रगति और चुनौतियों पर चर्चा करने के लिए विशेषज्ञ एकत्र हुए। सम्मेलन की शुरुआत आकर्षक सत्रों की एक श्रृंखला के साथ हुई, जिसमें विचारकों और वैज्ञानिकों ने कैंसर अनुसंधान, रोगी देखभाल और अग्रणी प्रौद्योगिकियों में हाल के रुझानों पर चर्चा की, जो भारत के स्वास्थ्य सेवा परिदृश्य को आकार दे रहे हैं। कार्यक्रम के पहले दिन की शुरुआत कैंसर अनुसंधान और रोगी देखभाल में हाल के रुझानों पर एक प्रस्तुति के साथ हुई, जिसने एक व्यावहारिक संवाद के लिए मंच तैयार किया। सीएसआईआर-सीडीआरआई के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. दीपक दत्ता और एसीटीआरईसी, मुंबई की डॉ. शलाका जोशी के नेतृत्व में एक सत्र में सम्पूर्ण सीएसआईआर कैंसर अनुसंधान कार्यक्रम पर ध्यान केंद्रित किया गया और भारत में स्तन कैंसर के प्रबंधन में अनूठी चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया तथा बेहतर परिणामों के लिए भारतीय डेटा का लाभ उठाने के महत्व को रेखांकित किया गया। यह कार्यक्रम वनकोजेनएआई (OncoGen.AI) के साथ जारी रहा, जो ऑन्कोलॉजिस्ट के लिए विकसित एक अभिनव मंच है जो व्यक्तिगत कैंसर चिकित्सा के लिए AI-संचालित सिफारिशों को एकीकृत करता है। इस अवसर पर आईआईआईटी दिल्ली के डॉ. गौरव आहूजा ने इस बात की अंतर्दृष्टि साझा की कि कैसे यह तकनीक लक्षित, डेटा-सूचित उपचार विकल्प प्रदान करके रोगी देखभाल को आगे बढ़ा रही है। बैंगलोर में ऑरिजीन के की ओर से डॉ. सुशांत समाजदार द्वारा एक अन्य प्रस्तुति में एओएल के प्रोप्राइटरी प्रोटीन डिग्रेडेशन प्लेटफॉर्म डीएनएसडी (DNSD) और एयूआर-110 (AUR-110) की पहचान, एक चयनात्मक एसडबल्यूआई/एसएनएफ (SWI/SNF) ATPase डिग्रेडर कैंडिडेट की शुरुआत की। कार्यक्रम का समापन डॉ. के.वी. शशिधर द्वारा संचालित एक जीवंत पैनल चर्चा के साथ हुआ, जिसमें डॉ. गौरव आहूजा, डॉ. शलाका जोशी और डॉ. सुशांत समाजदार ने एक संवादात्मक सत्र में भाग लिया, जिसमें अनुसंधान एवं विकास नवाचारों को सुलभ स्वास्थ्य सेवा समाधानों में बदलने पर महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर दिए गए, जिसमें भारतीय स्वास्थ्य सेवा पारिस्थितिकी तंत्र की चुनौतियाँ और उन्नत उपचारों को किफायती और सुलभ बनाने की रणनीतियाँ शामिल थीं। चर्चा के बाद, सीएसआईआर-सीडीआरआई की निदेशक डॉ. राधा रंगराजन ने सम्मेलन में उनके योगदान के लिए वक्ताओं और पैनलिस्टों को सम्मानित किया और किफायती स्वास्थ्य सेवा में भारत की अनुसंधान एवं विकास प्राथमिकताओं को आगे बढ़ाने के लिए उनके समर्पण को मान्यता दी।

सीएसआईआर-निस्पर

सम्पादक : शुभदा कपिल; सह सम्पादक : अनिरूद्ध तिवारी; प्रोडक्शन : अश्वनी कुमार ब्राह्मी
फोन : 25841769, 25846304–7/371; फैक्स : 25847062; ईमेल : csirsamachar@niscpr.res.in;
वेबसाइट : http://www.niscpr.res.in
बिक्री एवं वितरण अधिकारी, निस्पर; ईमेल : sales@niscpr.res.in; फोन : 011-25843359
वार्षिक सदस्यता: ₹ 500/– एक अंक: ₹ 50/–

प्रकाशक एवं मुद्रक श्री मुकेश अम्बादास पुंड द्वारा स्वामी राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर) डॉ. के.एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली–110012 से प्रकाशित एवं मुद्रित